Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 10 ~ Issue 7 (2022) pp: 303-307
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

कानपुर नगर के वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धजनों की स्थिति का अध्ययन

डॉ0 मुहम्मद मुस्तकीम
असि0 प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग
हलीम मुस्लिम पी0जी0 कॉलेज,
कानपुर।

साराँश
भारत में वृद्धजनों को सदैव सम्मान की दृष्टि से देखा गया है। कभी भी उन्हें समस्या के रूप में नहीं माना गया। उनकी बढ़ती जनसंख्या के कारण और बदलते परिवेश में उनके सम्मुख सामाजिक–आर्थिक, जीवन–निर्वाह, देख–भाल तथा परिवार में समायोजन की समस्याये आ रही है, और उन संस्थाओं के सामने भी समास्यायें आ रही है, जो उनकी देख–भाल की सुविधा प्रदान करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में कानपुर नगर में स्थिति वृद्धाश्रम में रहने वाले 80 वृद्धजनों का सामाजिक–आर्थिक स्थिति, वृद्धाश्रम में रहने के कारण प्रदत्त सुविधाओं आदि का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में पाया गया कि अधिकांशतः उत्तरदाता एकांकी परिवार से ताल्लुक रखते हैं और जो अशिक्षित हैं, अधिकतर उत्तरदाता विभिन्न कारणों से वृद्धाश्रम में आने को विवष हैं जैसे– आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भरता, बेटे व बहू द्वारा प्रताड़ना, दामाद द्वारा मौखिक गाली–गलौज, मारपीट, स्वास्थ्य समस्यायें, किसी का देखभाल के लिए न होना, आत्मसम्मान को ठेस आदि और बहुत से उत्तरदाता वृद्धाश्रम द्वारा प्रदत्त सुविधाओं से सन्तुष्ट नज़र आयें।
की–वर्ड– *वृद्धजन, वृद्धाश्रम।*

***Received** 10 July, 2022; **Revised** 23 July, 2022; **Accepted** 25 July, 2022* *© The author(s) 2022.*
Published** with open access at **www.questjournals.org

भारतीय संस्कृति में वृद्धजनों का सदैव उच्च स्थान रहा है यह ज्ञान व बुद्धि का भण्डार हैं। हिन्दू धर्म में दिन का आरम्भ इनके चरण स्पर्श और आशीर्वाद प्राप्त करके करते हैं। यह परिवार को एक सूत्र में बाँधने तथा मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। यह सामाजिक मूल्यों को स्थायित्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इसलिए परिवार व समाज का उत्तरदायित्व है कि इनके साथ स्नेह तथा सहानुभूति का व्यवहार किया जाये। ऋग्वेद में इनकी उत्तम सेवा के सम्बन्ध में कहा गया है कि ''पुनर्ये चक्रुः पितारा युवाना।।' (ऋग्वेद 4/33/3) अर्थात ऐसे मेधावी विद्वानों की प्रशंसा व अनुसरण करना चाहिये जो अपने वृद्ध माता–पिता की उत्तम सेवा करके उन्हें युवक के समान ऊर्जावान व स्वस्थ बना देते हैं।''

बदलते परिवेश में संयुक्त परिवार के विघटन के कारण और एकांकी परिवार के अस्तित्व में आने के कारण वृद्धजनों की स्थिति में परिवर्तन आया है अब परिवार सीमित हो गया है जो पति–पत्नी और बच्चों तक रह गया है। परिवार में उनका स्थान नगण्य रह गया है। अब यह अकेले तिरस्कृत तथा उपेक्षापूर्ण जीवन व्यतीत करने पर मजबूर है। इनके साथ परिवार में शोषण व दुर्व्यवहार हो रहा है। एन0एस0एस0 के 2017–18 के आँकड़ों के अनुसार भारत में 70 प्रतिशत वृद्धजन अपनी दैनिक जीवन निर्वाह के लिये दूसरों पर निर्भर हैं। जहाँ तक उनके साथ दुर्व्यवहार या शोषण का प्रश्न है तो नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरों (2019) की रिपोर्ट कहती है कि एक लाख की जनसंख्या पर वृद्धजनों के साथ अपराध दर सबसे अधिक थी।''

भारत में वृद्धजनों की स्थिति पर प्रकाश डालते हुये इण्डियन एसोसिएशन ऑफ पार्लियामेन्टेरियंस ऑन पापुलेशन एण्ड डेवलपमेन्ट (अगस्त 2020) की रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में बुजुर्गों का एक बहुत बड़ा हिस्सा अकेले रह रहा है या फिर अपने बच्चों पर निर्भर है। और रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि बुजुर्गों के मुद्दों पर बहुत ही कम ध्यान दिया जाता है।

समाज में वृद्धजनों की महत्ता बनाये रखने और उनके साथ होने वाले शोषण व दुर्व्यवहार की रोकथाम व समाज का ध्यान इस वर्ग की समस्याओं की ओर आकर्षित करने के लिये सन् 1990 सँयुक्त राष्ट्र महासभा ने प्रत्येक वर्ष 1 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस मनाये जाने की घोषणा की और वर्ष 1999 को अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन वर्ष घोषित किया। भारत में सरकार ने वरिष्ठों के जीवनयापन के लिये विभिन्न योजनायें एवं कार्यक्रम तैयार किये हैं। सरकार ने वृद्धजनों को उत्तम जीवन निर्वाह तथा दुर्व्यवहार व शोषण से सुरक्षा प्रदान करने के लिए जनवरी, 1999 में नेशनल पॉलिसी ऑन ऑल्डर परसन एन0पी0ओ0पी 1999 योजना तैयार की। इसके अतिरिक्त सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों की

देखभाल व बेहतर जीवन यापन के लिये माता पिता एवं वरिष्ठ नागरिक भरण पोषण एवं कल्याण अधिनियम 2007 पारित किया। जो वृद्धजनों एवं माता पिता के भरण–पोषण एवं देखभाल की प्रभावी व्यवस्था करती है।

विश्व में साठ वर्ष के ऊपर आयु के व्यक्तियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। 2020 में वृद्धजनों की जनसंख्या (65 वर्ष से ऊपर)727 मिलियन थी और यह जनसंख्या 2050 तक 1.5 बिलियन पहुँचने का अनुमान है। यह जनसंख्या भारत में भी बहुत तेजी के साथ बढ़ रही है राष्ट्रीय सर्वेक्षण के अनुसार भारत में वृद्धजनों की जनसंख्या 2021 में 138 लाख है जो 2031 में 194 लाख हो जाने का अनुमान है भारत वृद्धजनों की जनसंख्या के आधार पर विश्व में दूसरे स्थान पर तथा चीन प्रथम स्थान पर है।

देश में बढ़ती वृद्धजनों की संख्या के कारण उनके सामने समस्याऐं भी उत्पन्न हो रही है। परिवार में वित्तीय संकट के कारण उनके साथ शोषण व दुव्यर्वहार की घटनाओं में वृद्धि होने की भी सम्भावना है। अभी हाल ही में कानपुर में वृद्ध उत्पीड़न से सम्बन्धित एक मामला बहुत ही चर्चित रहा जिसमें बहू ने अपनी बूढ़ी सास को बड़ी बेरहमी से पीटा था, जिससे सास के शरीर पर मार–पीट के निशान पाये गये थे। पुलिस ने आरोपी बहू को धारा–151 के तहत कार्यवाही करते हुये उसे जेल भेज दिया था। (13 मई, हिन्दुस्तार, 2020) जब परिवार में ऐसी स्थिति होती है तो वृद्धजनों का स्वयं के घर में या परिवार के साथ रहना कठिन हो जाता है तो वह ऐसी स्थिति में ऐसे स्थान पर जाना पसन्द करते है जहाँ पर उनकी भरण–पोषण सुरक्षा तथा उचित देखभाल की उत्तम व्यवस्था हो जिससे वे शेष जीवन को शान्ति के साथ व्यतीत कर सके। वह स्थान वृद्धाश्रम एक विकल्प के रूप में हो सकता है। जहाँ उनको रहने, खाने–पीने और सुरक्षा की गारण्टी होती है।

देश में अनेकों वृद्धाश्रम संचालित हैं जो सरकार तथा विभिन्न एन0जी0ओ0 व ट्रस्ट द्वारा संचालित हो रहे हैं। कुछ वृद्धाश्रम बहुत अच्छे हैं परन्तु अधिकांश वृद्धाश्रम विभिन्न समस्याओं का सामना कर रहे हैं और वहाँ पर रहने वाले व्यक्ति भी इससे प्रभावित होते हैं। इन्ही व्यक्तियों की स्थिति को ज्ञात करने के लिए अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

1. वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धजनों की सामाजिक जनसाँख्यिकीय स्थिति का अध्ययन करना।
2. वृद्धजनों का आश्रम में रहने के कारणों का अध्ययन करना।
3. वृद्धजनों को आश्रम द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का अध्ययन करना।
4. वृद्धाश्रम में वृद्धजनों की जीवन सन्तुष्टि स्तर का अध्ययन करना।
5. वृद्धजनों की स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन :

1. कुमार, उदय, अरूण और साई (2016) ने अपने अध्ययन में पाया कि वृद्धों का आश्रम में रहने के मुख्य कारणों में बेटा व दामादों का उनके साथ दुर्व्यवहार और सामंजस्य की समस्या आदि है।
2. राजकुमार, गायत्री (2021) ने अपने अध्ययन में पाया है कि साधारणतया वृद्धजनों के साथ दामाद द्वारा मौखिक गाली गलौज (42.02 प्रतिशत), वित्तीय समस्यायें (14.49 प्रतिशत), बेटों द्वारा मौखिक गाली गलौज (14.49 प्रतिशत), देखभाल के लिए कोई नहीं (8.96 प्रतिशत) तथा शारीरिक शोषण (7.24 प्रतिशत) आदि दुर्व्यवहार होता है।
3. मिश्रा,सहारा और होमनाथ चलीस (2018) ने अपने अध्ययन में पाया है कि जो वृद्धजन प्राइवेट वृद्धाश्रम में रहते हैं उनका स्वास्थ सरकारी वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धजनों की तुलना में बेहतर होता है और यह लोग स्थानिक रोग से ग्रसित नहीं होते हैं।

शोध विधि :

प्रस्तुत शोध हेतु प्रदत्त संकलन के लिये कानपुर शहर में स्थिति वृद्धाश्रम में रहने वाले 80 व्यक्तियों को चयनित किया है न्यादर्शों का चुनाव सौदेश्य निदर्शन विधि से किया ळें

आँकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण :

तालिका नं0 1 सामाजिक–आर्थिक स्थिति

1	**लिंग**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	पुरूष	37	46.25
	महिला	43	53.75
2	योग	80	100.00
	आयु (वर्षों)	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	50–60	–	–
	धर्म	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	61–70	46	57.50
	71–80	30	37.50
	81 के ऊपर	04	05.00
	योग	80	100.00

3	हिन्दू	79	–
	मुस्लिम	01	1.25
	सिख	–	–
4	अन्य	–	–
	योग	80	100
	जाति	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
5	सामान्य	13	16.25
	पिछड़ा वर्ग	58	72.50
	अनुसूचित जाति	09	11.25
6	अनुसूचित जनजाति	–	–
	योग	80	100
7	**वैवाहिक स्थिति**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	विवाहित	62	77.50
	अविवाहित	14	17.50
8	तलाकशुदा	–	–
	विधवा	04	05.00
	योग	80	100
	परिवार का प्रकार	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	एकाकी	54	67.5
	सँयुक्त	26	32.50
	योग	80	100
	शिक्षा	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	अशिक्षित	47	58.75
	प्राइमरी	16	20.00
	मैट्रिक	9	11.25
	सेकेण्ड्री	5	6.25
	ग्रेजुएशन और ऊपर	03	3.75
	योग	80	100
	व्यवसाय (वृद्धाश्रम में आने से पहले)	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	सरकारी नौकरी	–	–
	प्राइवेट नौकरी	9	11.25
	व्यवसाय	18	22.50
	कृषि	12	15.00
	अन्य	41	51.25
	योग	80	100.00

उपरोक्त तालिका–1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि महिला उत्तरदाताओं का प्रतिशत 53.75 है अधिकांशतः उत्तदाताओं की आयु 61–70 के मध्य है जबकि 71–80 के मध्य 37.50 प्रतिशत ही उत्तरदाता है और 5 प्रतिशत उत्तदाता की आयु 81 से ऊपर है। अधिकांशतः उत्तरदाता (98.75 प्रतिशत) हिन्दू धर्म से ताल्लुक रखते हैं जो पिछड़ा सवर्ग (72.5 प्रतिशत) से आते हैं। 77.50 प्रतिशत विवाहित हैं जबकि 17.5 प्रतिशत अविवाहित हैं अधिकांशतः उत्तरदाता (58.75 प्रतिशत) अशिक्षित है जबकि 3.75 प्रतिशत उत्तदाता स्नातक या इससे अधिक पढ़े हैं। 11.25 प्रतिशत उत्तदाता प्राइवेट नौकरी (चपरासी, सफाई वाला आदि) सर्वाधिक 51.25 प्रतिशत उत्तदाता अन्य कार्यों में संलिप्त थे। 67.5 प्रतिशत उत्तदाता एकांकी परिवार से आते हैं जो वृद्धाश्रम में आने का मुख्य कारण है।

तालिका–2 वृद्धाश्रम में रहने के कारण

क्र0सं0	कारण	उत्तदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	आत्म सम्मान	6	7.50
2.	बेटे/बहू के द्वारा दुर्व्यवहार	22	27.50
3.	दामाद द्वारा गाली गलौज	17	21.25
4.	मार–पीट	05	6.25
5.	वित्तीय समस्या	12	15.00
6.	स्वस्थ समस्या	09	11.25

7.	कोई देख रेख करने वाला न होना	04	5.00
8.	अन्य	05	6.25
	योग	80	100

तालिका–2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वृद्धाश्रम में कोई भी वृद्ध जाना नहीं चाहता है, लेकिन फिर भी बहुत से ऐसे कारण हैं जिसमें मुख्य रूप से बेटे/बहू के द्वारा प्रताड़ना (27.50 प्रतिशत) दामाद द्वारा मौखिक गाली–गलौज (21.25 प्रतिशत) तथा वित्तीय समस्या (15 प्रतिशत) भी एक बहुत बड़ा कारण है। जबकि स्वस्थ समस्यायें (8.76 प्रतिशत) उनके साथ मारपीट (6.25 प्रतिशत) तथा अन्य कारण (86.25 प्रतिशत) भी है। जिसके कारण उनको यहाँ आना पड़ा। उत्तरदाताओं के मन में परिवार को लेकर एक पीड़ा है। अधिकांशतः और उत्तरदाताआ का मानना है कि उम्र के इस पड़ाव में परिवार के साथ रहना ज्यादा अच्छा है।

तालिका–3 खाली समय में गतिविधियां

क्रियाकलाप	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
टी0वी देखना	32	40.00
पढ़ना(अखबार पत्रिका आदि)	11	13.75
आपस में बातचीत करना	9	11.25
गेम्स खेलना	18	22.50
बागवानी	–	–
अन्य गतिविधियां	10	12.50
योग	80	100

वृद्धाश्रम में वृद्धजनों के पास बहुत खाली समय होता है। उनको करने के लिये कुछ नहीं होता है फिर भी उनको बुरी यादों और मन को परिवर्तित करने के लिए उनको विभिन्न गतिविधियों में व्यस्त रखा जाता है। उपरोक्त तालिका–3 में खाली समय में वृद्धजनों द्वारा की गई गतिविधियों को दर्शाया गया है सर्वाधिक 32 प्रतिशत टी0वी0 देखने में उत्तरदाता विभिन्न प्रोग्रामों को देखने में अपना समय व्यतीत करते हैं। 22.50 प्रतिशत विभिन्न तरह के गेम्स और समूह गतिविधियों में प्रतिभाग करते हैं। 13.75 प्रतिशत उत्तरदाता साथ में बैठकर अखबार व पत्रिकायें पढ़ते हैं। 12.50 प्रतिशत उत्तरदाता अपने खाली समय को आश्रम की विभिन्न गतिविधियों में संलिप्त रखते हैं।

तालिका–4 वृद्धाश्रम द्वारा प्रदान की गयी सुविधाओं की स्थिति

सुविधायें	पूर्ण सन्तुष्ट	कुछ हद तक सन्तुष्ट	पूर्ण असन्तुष्ट	कुछ हद तक असन्तुष्ट
सामान्य सुविधायें	15	47	02	16
स्वास्थ्य सुविधायें	22	35	05	18
मनोरंजन सुविधायें	40	27	–	13

तालिका–4 के आँकड़ों से ज्ञात होता है कि वृद्धाश्रम द्वारा प्रदान की जा रही सुविधाओं से सन्तुष्ट(15) और कुछ हद तक असन्तुष्ट (47) है जबकि दो उत्तरदाता पूर्णरूप से असन्तुष्ट है और सोलह उत्तदाता कुछ हद तक असन्तुष्ट हैं। वृद्धाश्रम से यह अपेक्षा की जाती है कि वह ऐसी सुविधायें प्रदान करें जिससे वहाँ रहने वाले वरिष्ठो के जीवन गुणवत्तापूर्ण हो सकें। जबकि वृद्धाश्रम में सामान्य सुविधायें जैसे–खाना, कपड़े, रहने की व्यवस्था, स्वास्थ्य आदि सुविधाये प्रदान करते हैं।

शोध के परिणाम एवं निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययन से ज्ञात होता है कि वृद्धाश्रम में अशिक्षत, विधवा तथा आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भरता आदि पृष्ठभूमि के वरिष्ठ व्यक्ति आते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया कि वृद्धजनों के साथ बेटे और बहू द्वारा मौखिक गाली गलौज, दामाद द्वारा दुर्व्यवहार और मौखिक गाली गलौज, वित्तीय समस्यायें किसी का न होना स्वस्थ्य समस्यायें आदि समस्यायें है जिसके कारण उन्हें वृद्धाश्रम की शरण में आना पड़ा या वहाँ भेज दिया गया। अधिकांशतः उत्तरदाता वृद्धाश्रम द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं से सन्तुष्ट थे क्योंकि उन्हें खाने, पीने, रहने पहनने के कपड़े स्वास्थ सुविधाओं सब निःशुल्क प्रदान की जा रही थी, और यही सुविधायें उनके अपने परिवार के देने में असमर्थ थे।

बदलते परिवेश में वृद्धजनों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाओं में वृद्धि हो रही है यह सभ्य समाज के लिए अच्छा संकेत नहीं है। इस अवस्था में उनके साथ प्रेम पूर्व व्यवहार तथा देख–भाल की आवश्यकता होती है। परन्तु वृद्धाश्रमों में बढ़ती इनकी संख्या सभ्य समाज के लिए कलंक है। आवश्यकता इस बात की है कि हम समाज को जागरूक करें कि परिवार में इनकी आवश्यकता है और जो वृद्धाश्रम है उनको सुविधाओं से सुसज्जित किया जाये जिससे वहाँ रहने वाले वृद्धजनों का दैनिक जीवन निर्वाह आसानी से हो सके। सरकार को इनके लिये उत्तम योजनायें बनाकर, उनको लागू

करवायें जिससे इन योजनाओं का लाभ उन तक पहुँचे। सरकार को कम से कम प्रत्येक जिले में सुविधाओं से सुसज्जित एक वृद्धाश्रम खोलना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. Acharya, P.(2008), "Senior citizen and the elderly homes. A survey from Kathmandu Dhaulgiri Anthropol, 2:211-226

[2]. Amonkar, P., M.J. Mankar, P. thatkar, P. Sawardeker, R. Goel and S. Anjenaya (2018),"A comperative study of health status and quality of life of elderly people living in old age home and within family set up in Raigad Dist. Maharashtra Indian J. community Med., 43:10-13.

[3]. Help Age India (2013), Help Age India Marks world elder abuse awareness day. Help Age new p.p. 4

[4]. Help Age India (2014) old age homes: providing security company for the aged. Times of India.

[5]. Kumar, uday, Arun, & Sai, Quality of life of elderly people in institutional and non-institutional setting: A cross-sectional comparative study Nel.J Community Med. 2016; 7(7):546-550

[6]. Kumari and Murthy, (2018) Elderly living in old age home and within family setup GJRA-sep. 6(9): 39-41.

[7]. Menezes, Sunita and Thomas, (2018), "Status of Elderly and Emergence of old age home in India," IJSS, 5(1)1-4 (www.ijssm.org)

[8]. Mishra, Shara and Chalise (2018), "Health Status of elderly living in Government and Private Old Age Home in Nepal Asian Journal of Biological Sciences 11:173-178 (http:// Scialert net, doi=ojbs 2018. 173-178

[9]. National Crime Record Bureau Annual Report- 2019, Ministry of Home Affairs, Govt. of India, New Delhi.

[10]. National Sample Survey Report 2017-18 Ministry of statistics and programme Implementation Govt. of India, New Delhi.

[11]. Raj Kumari, Gaitri (2021), " A study of elderly living in Old Age homes in Manipur. http: //www. longdom.org/open-access/a study-of-elderly- living-in-old-age-homes-in-manipur-India pdf.

[12]. Tripathi, P. (2014) Elderly: care and crisis in old age home international journal of multidisciplinary Research in social & management science 2(2), 86-90. http:/www.irejournals.org/vol2 issue 2 186-190 pdf.

*Corresponding Author: डॉ0 मुहम्मद मुस्तकीम